

कारखाना अधिनियम, 1948

फ़ैक्टरी अधिनियम, 1948 क्या है?

फ़ैक्टरी अधिनियम, 1948, फ़ैक्टरियों में कार्यरत श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा अधिनियमित कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उद्देश्य कारखानों में काम करने की स्थितियों को विनियमित करना और दुर्घटनाओं, व्यावसायिक बीमारियों और श्रमिकों के शोषण को रोकना है।

कानूनी ढांचा:

फ़ैक्टरी अधिनियम फ़ैक्टरियों के संचालन और कार्य स्थितियों के विनियमन के लिए एक व्यापक कानूनी ढांचा प्रदान करता है। यह उन सभी परिसरों पर लागू होता है जहां विनिर्माण प्रक्रियाएं बिजली की सहायता से की जाती हैं और दस या अधिक श्रमिकों को नियोजित किया जाता है, या जहां विनिर्माण प्रक्रियाएं बिजली की सहायता के बिना की जाती हैं और बीस या अधिक श्रमिकों को नियोजित किया जाता है।

प्रमुख प्रावधान:

स्वास्थ्य एवं सुरक्षा उपाय:

फ़ैक्टरी अधिनियम श्रमिकों को व्यावसायिक खतरों और जोखिमों से बचाने के लिए फ़ैक्टरियों में विभिन्न स्वास्थ्य और सुरक्षा उपायों को लागू करने का आदेश देता है। इन उपायों में उचित वेंटिलेशन, प्रकाश व्यवस्था, सफाई और स्वच्छता सुनिश्चित करने के साथ-साथ पर्याप्त अग्नि सुरक्षा उपकरण और आपातकालीन निकास प्रदान करना शामिल है।

काम के घंटे और आराम की अवधि:

यह अधिनियम वयस्क श्रमिकों के काम के घंटों को नियंत्रित करता है और सप्ताह में 48 घंटे और दिन में नौ घंटे से अधिक श्रमिकों के रोजगार पर रोक लगाता है। यह आराम के अंतराल को भी अनिवार्य करता है, जैसे कि पांच घंटे के काम और साप्ताहिक छुट्टियों के बाद कम से कम आधे घंटे का दैनिक आराम।

महिलाओं और बच्चों का रोजगार:

फ़ैक्टरी अधिनियम में महिलाओं और बच्चों के रोजगार के प्रावधान शामिल हैं, जिसमें रात की पाली के दौरान महिलाओं के रोजगार पर प्रतिबंध और महिला और बाल श्रमिकों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने के प्रावधान शामिल हैं।

कल्याण प्रावधान:

अधिनियम में श्रमिकों के कल्याण के लिए प्रावधान शामिल हैं, जैसे कि एक निश्चित संख्या में श्रमिकों को रोजगार देने वाले कारखानों में स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता सुविधाएं, प्राथमिक चिकित्सा सुविधाएं और कैंटीन सुविधाएं प्रदान करना। यह एक निश्चित संख्या में श्रमिकों को रोजगार देने वाले कारखानों में कल्याण अधिकारियों की नियुक्ति को भी अनिवार्य बनाता है।

व्यावसायिक स्वास्थ्य:

फ़ैक्टरी अधिनियम के अनुसार फ़ैक्टरियों को व्यावसायिक बीमारियों का पता लगाने और उन्हें रोकने के लिए श्रमिकों की समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करने की आवश्यकता होती है। यह उपयुक्त अधिकारियों को दुर्घटनाओं, खतरनाक घटनाओं और व्यावसायिक बीमारियों की रिपोर्ट करने का भी आदेश देता है।

श्रमिकों पर प्रभाव:

फ़ैक्टरी अधिनियम श्रमिकों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करके और फ़ैक्टरियों में सुरक्षित काम करने की स्थिति सुनिश्चित करके उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह दुर्घटनाओं, चोटों और व्यावसायिक बीमारियों को रोकने में मदद करता है, जिससे श्रमिकों की भलाई और उत्पादकता को बढ़ावा मिलता है।

चुनौतियाँ और सुधार:

जबकि फ़ैक्टरी अधिनियम कारखानों में काम करने की स्थिति में सुधार करने में सहायक रहा है, इसे अपर्याप्त प्रवर्तन, अनुपालन मुद्दों और उभरते व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिमों को संबोधित करने के लिए आधुनिकीकरण की आवश्यकता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रवर्तन तंत्र को मजबूत करने, सुरक्षा प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी बढ़ाने और कारखानों में व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सुधारों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

फ़ैक्टरी अधिनियम, 1948, फ़ैक्टरियों में काम करने की स्थिति को विनियमित करने और श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यस्थल सुरक्षा, स्वच्छता और कल्याण के लिए मानक स्थापित करके, यह अधिनियम श्रमिकों की समग्र भलाई और उत्पादकता में योगदान देता है और सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

हालाँकि, मौजूदा चुनौतियों का समाधान करने और श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और कार्यस्थल दुर्घटनाओं और चोटों को रोकने के लिए अधिनियम के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।